20

अपने बच्चों को सिखाने के लिए तीन सच्चाइयां

(5:1-8)

लेखकों में रोमियों 5 के पौलुस के विचार के विकास से मेल खाने के ढंग पर असहमति है। कइयों का मानना है कि यह अध्याय विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने पर पौलुस की शिक्षा का चरम है, जबकि अन्य इसे अगले अध्यायों के साथ जोड़ते हैं। यह धर्मी ठहराए जाने और पवित्र किए जाने के दो विषयों के बीच पुल का काम करता है।

3:21-4:25 में पौलुस ने वचन और तर्क का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया कि धर्मी ठहराया जाना विश्वास के आधार पर होता है। अब इस नियम को साबित कर लेने के बाद वह धर्मी ठहराए जाने की आशिषों की सूची बनाने को तैयार था। विलियम बार्कले ने लिखा है कि रोमियों 5 का पहला भाग पौलुस की ''काव्यात्मक आयतों'' में से एक है, ''जिनमें वह लगभग परमेश्वर में अपने भरोसे के आनन्द का गीत गाता है।''[1] आर.सी. बेल्ल ने कहा, ''मसीहियत के असीमित संसाधनों से इतना लबालब भरा वचन शायद ही कोई हो।''[2]

इस और अगले पाठ में हम 5:1-11 का अध्ययन करेंगे। ये आयतें हमें यह समझने में सहायता करती हैं कि पौलुस किस प्रकार इतनी कठिनाइयों को सह पाया (देखें 2 कुरिन्थियों 11:23-29), केवल उन्हें सहने के लिए नहीं, बल्कि उन पर विजय पाने के लिए (देखें रोमियों 8:37)। उसके सामने जो भी समस्याएं आईं, उसे शान्ति और आशा थी (5:1, 2, 4, 5)। उसे मालूम था कि परमेश्वर उससे प्रेम परमेश्वर करता है (5:5-9)। उसे मालूम था कि उसके शत्रु चाहे उसे मार भी डालें तौ भी वह अनन्तकाल तक बचाया जाएगा यानी वह महिमा में परमेश्वर के साथ होगा (5:2, 9, 10)।

पौलुस इस आश्वासन को उन लोगों के साथ साझा करना चाहता था, जिन्हें उसने सिखाया था। हर वह व्यक्ति जिसे हम सिखाते हैं उसे भी रोमियों 5:1-11 की सच्चाइयां पता होनी आवश्यक हैं। विशेषकर हमें *अपने बच्चों* के मनों पर इन अवधारणाओं को डालना आवश्यक है।[3] मैं इस पाठ का नाम ''अपने बच्चों को सिखाने के लिए तीन सच्चाइयां'' रख रहा हूं।

सच्ची शान्ति झगड़े की अनुपस्थिति में नहीं बल्कि प्रभु की उपस्थिति में मिलती है (5:1, 2)

''शान्ति का इनाम विश्वव्यापी मानवीय मनोदशा है,''[4] परन्तु अधिकतर लोग शान्ति को इस प्रकार देखते हैं, जिसमें कोई झगड़ा न हो। कई बार शान्ति की अवस्था हो सकती है, परन्तु एक बात पक्की है कि शीघ्र ही यह भंग हो जाएगी। पाप के बीमार संसार में बेचैनी का राज है न कि

उसके अपवाद का। यदि आपके बच्चे जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने के लिए तैयार हैं तो उन्हें समझ होनी आवश्यक है कि सच्ची शान्ति वहां नहीं मिलती जहां झगड़ा न होता, बल्कि वहां होगी जहां प्रभु है।

हमारे पास शान्ति है! (आयत 1)

पौलुस ने अध्याय 5 का आरम्भ ''सो'' शब्द से किया है। ''सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल[5] रखें'' (आयत 1)। व्यवस्था/कर्मों का प्रबन्ध बेचैनी और संदेह पैदा करता है, क्योंकि हम व्यवस्था का पालन पूर्ण रूप से नहीं कर सकते। इसके विपरीत परमेश्वर के अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध से शान्ति मिलती है।

''परमेश्वर के साथ मेल'' वाक्यांश का अर्थ अधीन भावना नहीं बल्कि उद्देश्यपूर्ण सच्चाई है क्योंकि हमें धर्मी ठहराया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर के साथ हमारी सुलह कराई गई है (आयतें 10, 11)। अब हम परमेश्वर के शत्रु नहीं रहे, बल्कि उसके मित्र बन गए हैं। ''शत्रुता खत्म हो गई है और शान्ति समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए गए हैं।''[6]

हमारा ''परमेश्वर *के साथ* मेल'' है, इस कारण हम ''परमेश्वर *की* शान्ति'' का आनन्द लेते हैं, जो इतनी अद्‌भुत भावना है कि ''समझ के बिल्कुल परे है'' (देखें फिलिप्पियों 4:7), जो ''मानवीय समझ से ऊपर'' (फिलिप्स) है। यह शान्ति संसार में सही होने वाली हर बात पर चमकती है; यह भावनात्मक संतुष्टि से कहीं बढ़कर है। ऐसी शान्ति का स्रोत परमेश्वर के साथ सम्बन्ध मधुर बनाना है, जो बाहरी परिस्थितियां कैसी भी होने पर संतुष्टि का बोध करा सकती हैं (देखें 5:3, 4)। यदि हम मसीही हैं और हम में परमेश्वर *की* शान्ति की कमी है तो शायद यह इसलिए है कि हमें इस बात की पूरी समझ नहीं कि परमेश्वर *के साथ* मेल का क्या अर्थ है।

परमेश्वर के साथ हमारा यह मेल ''अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा'' है (आयत 1ख)। परमेश्वर के साथ मेल सम्भव है क्योंकि यीशु हमें अपने पिता से मिलाने के लिए मरा (आयतें 6-8, 10, 11)। यह ध्यान देते हुए कि पौलुस ने कितनी बार कहा कि हमारी आत्मिक आशिषें मसीह ''के द्वारा'' हैं, 5:1-11 को पढ़ें (आयतें 1, 2, 9-11)।

हम अनुग्रह में बने हैं (आयत 2क)

आयत 2 का आरम्भ पौलुस के ''के द्वारा'' कथनों में से एक के साथ होता है: ''यीशु के द्वारा विश्वास[7] के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं।''

''मेल रखें'' वाक्यांश मिश्रित शब्द *Prosagoge* (*pros* [''से'']) के साथ *ago* [''अगुआई करना''] से लिया गया है, जिसका अर्थ ''की उपस्थिति में अगुआई करना या लाना'' है।[8] हम अपने आप को यीशु के परमेश्वर के दरबार में ले जाने और चेहरे पर मुस्कान के साथ यह कहने की बात सोच सकते हैं, ''मैं आपको अपने मित्र से मिलाता हूं!''[9]

पौलुस ने कहा कि हमें ''उस अनुग्रह'' लाया गया है। यह '' 'अनुग्रह' [शब्द] का इस्तेमाल करते हुए एक असामान्य ढंग'' है।[10] आमतौर पर हम अनुग्रह (*charis*) को मसीही बनने के समय हमारे पापों के दोष से बचाने के रूप में समझते हैं। परन्तु यहां पर ''उस अनुग्रह'' का अर्थ *''अनुग्रह की स्थिति''*[11] है, जिसमें हमें धर्मी ठहराए जाने में मिलाया जाता है। NEB में ''परमेश्वर

के अनुग्रह का दायरा'' है, जबकि AB में इसे ''परमेश्वर के समर्थन की स्थिति'' कहा गया है।

हमें अनुग्रह की आवश्यकता केवल उद्धार *पाने* के लिए ही नहीं, बल्कि उद्धार *पाए रखने* के लिए भी है। मसीही होने के रूप में मिलने वाली हमारी *कोई भी* आशीष कमाई नहीं जा सकती। हमारे प्रतिदिन का प्रबन्ध या उपाय अनुग्रह से होता है। हम पाप करते रहते हैं और हमारे पापों की क्षमा अनुग्रह से होती है। हर रोज़ जीने की शक्ति अनुग्रह से मिलती है। जॉन न्यूटन के गीत का अनुवाद है, ''वो मेरी है मीरास और ढाल, और रहेगा हर आन।''[12]

धर्मी ठहराया जाना हमें अनुग्रह की इस अद्‌भुत स्थिति में ले आता है ''जिसमें'' पौलुस ने कहा कि ''हम बने रहते हैं [*histemi*]।'' कई लोग ''जिसमें हम बने रहते हैं'' का अर्थ उससे अधिक बनाने का प्रयास करते हैं, जो पौलुस ने चाहा। वे ''हम बने रहते हैं'' का अर्थ यह निकालते हैं कि अनुग्रह की स्थिति में हमारा रहना स्थाई है, यानी ''अनुग्रह से गिरना'' असम्भव है। इस तथ्य के बावजूद कि गलातियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने उन कुछ लोगों की बात की, जो ''अनुग्रह से गिर गए'' थे, वे इस व्याख्या पर ज़ोर देते हैं (गलातियों 5:4; देखें 1 कुरिन्थियों 10:12)।

''बने रहते'' शब्द कई बार स्थिर रहने की आवश्यकता का संकेत देता है (देखें इफिसियों 6:14)। परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार करने से पूर्व हम स्वतन्त्र नैतिक जीव थे और उसके अनुग्रह के द्वारा उद्धार पा लेने के बाद भी हम स्वतन्त्र नैतिक जीव हैं। मसीही बनने से पहले हम अपनी इच्छा से परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार कर सकते थे या उसे ठुकरा सकते थे, मसीही बनने के बाद भी हम चाहें तो उसे स्वीकार करें चाहें तो ठुकरा दें। इस कारण पौलुस ने तीमुथियुस से ''उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त'' होने का आग्रह किया (2 तीमुथियुस 2:1)। पतरस ने अपने पाठकों से ''... हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते ...'' रहने के लिए कहा (2 पतरस 3:18)।

''जिसमें हम बने रहते हैं'' वाक्यांश का अर्थ हमें उससे जो यह कहता है, *अधिक* नहीं लगाना चाहिए, परन्तु यह यह भी नहीं कहता कि हम इसका अर्थ *कम* लगाएं। शब्दों में पूरा आश्वासन और भरोसा है। AB में ''जिसमें हम [दृढ़ और सुरक्षित ढंग से] खड़े हैं'' है। रोमियों 8 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि ''परमेश्वर हमारी ओर है'' (आयत 31) यानी वह हमारे पक्ष में है! वह हमें नष्ट करने का इच्छुक नहीं, बल्कि हमें छुड़ाना चाहता है। हम परमेश्वर की ओर अपनी पीठ कर सकते हैं और दुःख की बात है कि कई लोग ऐसा करते भी हैं, परन्तु जब तक हम यीशु में विश्वास रखते और आज्ञाकारिता के साथ उस विश्वास को दिखाते हैं, हम ''परमेश्वर के अनुग्रह के दायरे'' में अर्थात ''परमेश्वर के समर्थन की स्थिति'' में बने रहेंगे! यदि इससे हमारे मनों में शान्ति नहीं आती तो किसी और बात से नहीं आ सकती!

हम आशा में आनन्द करते हैं! (आयत 2ख)

परमेश्वर के अनुग्रह और इससे मिलने वाली शान्ति के कारण हम ''परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें'' (आयत 2ख)। 5:1-11 में तीन बार पौलुस ने कहा कि हमें ''घमण्ड'' करना चाहिए (आयतें 2, 3, 11)। ''घमण्ड'' (exult) वह साधारण शब्द नहीं है जिसका इस्तेमाल हमारे यहां होता है। इन आयतों में NIV में अधिक प्रचलित शब्द ''rejoice'' है।

अंग्रेज़ी शब्द ''exult'' और ''rejoice'' के लिए यूनानी शब्द (*kauchaomai*) का अनुवाद पत्र में पहले ''घमण्ड'' (2:17, 23; 3:27; 4:2) और कुछ अनुवादों में यहां इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है (NRSV; CJB; JB)। हमें उस पर जो *हमने* किया है, शेखी नहीं मारनी चाहिए, परन्तु जो *परमेश्वर* ने किया है उस पर गर्व करने में कोई बुराई नहीं है (देखें 1 कुरिन्थियों 1:31; गलातियों 6:4)। 5:11 में पौलुस ने कहा कि हम ''परमेश्वर में आनन्दित होते [घमण्ड करते] हैं।'' 15:17 में उसने कहा कि ''मसीह यीशु में'' वह ''बड़ाई कर सकता'' था। तौ भी हम में से कई लोग ''आनन्द'' जैसे शब्द से अधिक संतुष्ट होते हैं, जिस कारण मैं अपनी टिप्पणियों में इसी शब्द का इस्तेमाल करूंगा।

पौलुस ने कहा कि हम ''आशा [*elpis*] पर'' आनन्दित होते हैं। आशा आवश्यक है क्योंकि आशा ही हमें बनाए रखती है और चलाती है (देखें इब्रानियों 6:19)। एक बार एक लड़का किसी अस्पताल के बर्न सेंटर में था, जिसके शरीर का अधिकतर भाग जल चुका था। उसमें सुधार नहीं आया जब तक एक दिन एक शिक्षक ने उसके कमरे में आकर यह नहीं कहा, ''मुझे तुम्हारे पास इसलिए भेजा गया है कि कहीं तुम्हारा होमवर्क अधिक जमा न हो जाए।'' लड़के में तेजी से सुधार होने लगा, उसने कहा, ''यदि मैं मरने वाला होता तो वे मेरे पास शिक्षक को न भेजते।''[13] अन्ततः उसे आशा मिल गई थी!

जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था, बाइबल की आशा केवल काल्पनिक नहीं है बल्कि यह इच्छा के साथ उम्मीद भी है। बार्कले ने लिखा है, ''मसीही आशा केवल कांपना, हिचकिचाते हुए आशा रखना नहीं है कि शायद परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं सही हो जाएं। यह पक्की उम्मीद है कि वे किसी भी प्रकार झूठी नहीं हो सकतीं।''[14] इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है कि हमारी आशा ''स्थिर और दृढ़ है'' (इब्रानियों 6:19)।

इस विचार को आगे बढ़ाते हुए पौलुस ने कहा कि हमारी आशा ''परमेश्वर की महिमा [*doxa*] में'' है (आयत 2ख)। इसका अर्थ एक दिन हमारा परमेश्वर की महिमा को देखना हो सकता है (देखें मरकुस 13:26; तीतुस 2:13)। इसका अर्थ स्वर्ग में हमारे उसकी ईश्वरीय महिमा में सांझ करना हो सकता है (देखें RSV; REB; CJB)। रोमियों 8 में पौलुस ने कहा कि यदि ''हम उसके साथ दुःख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएंगे'' (आयत 17; देखें 8:18; 9:23)। दूसरी ओर ''परमेश्वर की महिमा'' यहां पृथ्वी पर परमेश्वर महिमा की झलक की हमारी आशा का सुझाव हो सकता है। मनुष्यजाति को ''परमेश्वर का स्वरूप और महिमा'' होने के लिए बनाया गया था (1 कुरिन्थियों 11:7; देखें उत्पत्ति 1:26, 27; 9:6; याकूब 3:9), परन्तु मनुष्यजाति ''बिगड़ा हुआ स्वरूप'' बन गई। पापी लोगों ने ''अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगने वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला'' (रोमियों 1:23)। तौ भी मसीह के द्वारा हम ''वह सब बन सकते हैं, जो परमेश्वर के मन में था कि हम बनें'' (5:2; LB)। यह हो सकता है कि ''परमेश्वर की महिमा'' में ऊपर लिखित *सभी* बातें शामिल हों।

5:1-11 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि धर्मी ठहराया जाना आनन्द करने का कारण देता है क्योंकि यह भूत, वर्तमान और भविष्य की आशिषें लेकर आता है:

- भूत: हमें परमेश्वर से मिलाया गया है!
- वर्तमान: हम परमेश्वर के अनुग्रह में बने हैं!
- भविष्य: हमें परमेश्वर की महिमा की आशा है!

इन महान आशिषों को समझते हुए हमारे मनों में शान्ति होनी चाहिए।

आप फैसला करें कि कठिनाई आपको बेहतर बनाती है या बदतर (5:3-5क)

''परमेश्वर के साथ मेल'' (आयत 1) होने के पौलुस के शब्दों पर ध्यान करते हुए उसके पाठकों ने सोचा होगा, ''हां, निश्चय ही सब कुछ ठीक होने तक हम मेल और आनन्द और आशा पा सकते हैं, परन्तु बुरा समय आने पर क्या होगा?'' पौलुस को इस बात की समझ थी कि बुरा समय आता है। उसने स्वयं इसे भोगा। नये मसीही बनने वालों को उसने बताया, ''हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा'' (प्रेरितों के काम 14:22)। यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है'' (यूहन्ना 16:33)। रोम के मसीही लोगों ने यदि अभी कठिन समय नहीं देखे थे तो भविष्य में उन पर कठिन समय आने वाला था (देखें 2 तीमुथियुस 3:12)।

परेशानी को रोका नहीं जा सकता। आज नहीं तो कल हमारे बच्चों को दर्द सहना ही होगा। हम उन्हें जीवन की कठोर सच्चाइयों के लिए कैसे तैयार कर सकते हैं? उन्हें कष्ट के महत्व पर नये नियम के महान वचनों में से एक रोमियों 5:3-5क की सच्चाइयां बताने से बेहतर और कोई ढंग नहीं होगा।[15]

कई साल पहले एक जवान ब्रिटिश राजनयिक साइप्रस के राज्यपाल के रूप में सेवा कर रहा था। जब उसने अपने आप को एक बड़ी जटिल राजनैतिक स्थिति में पाया। उसके परेशान पिता ने केवल छह शब्दों वाली एक केबल भेजी: ''2 कुरिन्थियों चार की आठ और नौ।'' जवान राजनयिक ने इस वचन को देखा: ''हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते'' (2 कुरिन्थियों 4:8, 9)। अपने पिता के मन को हल्का करने के लिए उस जवान ने पांच शब्दों वाली एक केबल भेजी: ''रोमियों पांच का तीन और चार।'' यह वचन हमारे पाठ का भाग है: ''केवल यही नहीं, बरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज। और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है'' (5:3, 4)।[16]

''क्लेश'' (आयत 3क)

आयत 3 आरम्भ होती है, ''केवल यही नहीं [केवल अच्छे समयों में ही आनन्द नहीं], वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड [आनन्द] करें।'' अनुवादित शब्द ''क्लेश'' यूनानी भाषा के बहुवचन शब्द *thlipsis* के बहुवचन रूप से लिया गया है, जिसका ''मुख्य रूप से अर्थ दबाना, दबाव है।''[17] यह ऐसा शब्द था, जिसका इस्तेमाल जैतून से तेल या अंगूरों से रस निकालने के लिए किया जाता था। AB में ''क्लेश'' की जगह ''दबाव और पीड़ा और कठिनाई'' है। एक मसीही पर कई चीज़ें ''दबाव'' डाल सकती हैं: ''आवश्यकता और कठिन परिस्थितियां, कष्ट और सताव, गुमनामी

और अकेलापन''। संसार के इतिहास में कई बार ''क्लेश'' शब्द में मृत्यु की धमकी शामिल हुई है।

जब क्लेश आते हैं, और वे आएंगे, तो हमारी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? आम प्रतिक्रिया रोना और चिल्लाना, बुड़बुड़ाना और शिकायत करना होती है। हम में से कई लोग क्लेश को केवल भाग्य की बात मानते हैं। परन्तु पौलुस ने कहा कि जब समस्याएं आती हैं तो हमें *आनन्दित* होना चाहिए। क्या कहा, आनन्दित? क्या मैंने सही पढ़ा है? अपने चेहरे पर बड़ी सी मुस्कराहट लेकर घर आ रहे आदमी की कल्पना करें जो अपनी पत्नी से कहता है, ''आज का दिन सचमुच बहुत अच्छा था! मसीही होने के कारण आज दिन भर मेरा मज़ाक उड़ाता जाता रहा और मेरी नौकरी भी छूट सकती है। कितनी अच्छी बात है न?''[19]

इस बात को समझें कि पौलुस यह नहीं कह रहा था कि हमें केवल इसलिए आनन्दित होना चाहिए कि हमारे जीवन में क्लेश आया है। वह पीड़ा में सुख महसूस करने अर्थात मासोकवाद की वकालत नहीं कर रहा था। बल्कि वह यह बता रहा था कि जब अनहोनी हो जाए और क्लेश आ जाए तो भी हमारे पास आनन्द करने का कारण है क्योंकि परमेश्वर हमारी समस्याओं का इस्तेमाल लोगों की बेहतरी के लिए कर सकता है। क्लेश *कड़वा* पेड़ हो सकता है, परन्तु आवश्यक नहीं कि यह *बेफल* पेड़ हो;[20] इसका फल बड़ा अच्छा हो सकता है।

''धीरज''(आयत 3ख)

पौलुस ने घटनाओं की शृंखला की रूप रेखा देते हुए समझाया कि हम क्लेश में कैसे आनन्द कर सकते हैं। उसने कहना आरम्भ किया, ''यह जानकर कि [विश्वास से] क्लेश से धीरज'' उत्पन्न होता है[21] (आयत 3ख)। ''धीरज'' यूनानी शब्द *hupomone* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''के अधीन रहना'' है।[22] यह कुछ भी हो जाने के बावजूद चलते रहने के लिए स्थिर और दृढ़ रहने की क्षमता को दर्शाता है। डेल हार्टमैन ने सुझाव दिया है कि यह सुबह उठना, कपड़े पहनना और एक और दिन मसीह के लिए जीने का निश्चय करना है।[23] बार्कले ने इस शब्द का अनुवाद ''विपत्ति में साहस'' के रूप में किया है, और कहा कि यह ''आत्मा है जो [न केवल] निष्क्रियता से सहती है बल्कि जो सक्रियता से जीवन की परीक्षाओं और क्लेशों पर काबू पाती है।''[24]

परीक्षाओं का सकारात्मक परिणाम अपने आप नहीं निकल आता। कई लोगों में कष्ट से धीरज नहीं, बल्कि कड़वाहट और निराशा आती है। क्लेश से धीरज तभी मिलता है, यदि हम *विश्वास के साथ* इसका सामना करें। हम मानते हैं कि परमेश्वर हमारे सहने से बाहर की हर परीक्षा से हमें बचाएगा (1 कुरिन्थियों 10:13)। हमारा मानना है कि सब बातें मिलकर भलाई के लिए काम करती हैं (रोमियों 8:28)। हमारा विश्वास है कि परमेश्वर की सहायता से परीक्षाओं से हम बेहतर लोग बन सकते हैं।

परीक्षाएं हमें बेहतर *कैसे* बना सकती हैं? इसका नियम बड़ा प्रसिद्ध है। बिना व्यायाम के शरीर मजबूत नहीं हो सकता। बिना आग में डाले, सोना कुन्दन नहीं बन सकता। इसी प्रकार (चाहे हमें बुरा लगे), बिना परीक्षाओं के हम आत्मिक तौर पर वह नहीं बन सकते, जो हमें बनना चाहिए। जब डेल हार्टमैन ओक्लाहोमा क्रिश्चियन कॉलेज से स्नातक हुए, तो उनके शिक्षक और परामर्शदाता, ह्यूगो मेकोर्ड ने उन्हें बताया, ''मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर तुम पर इतना कष्ट भेजे,

जिससे तुम उपयोगी बन सको!''[25]

''खरा निकलना'' (आयत 4क)

फिर पौलुस ने कहा कि ''धीरज से खरा निकलना [होता है]'' (आयत 4क)। ''खरा निकलना'' *dokime* से लिया गया है, जो ''नये नियम में पूर्णतया पौलुस का शब्द है। ... यह 'परख करना' [*dokimazo*] से जुड़ता है और परीक्षा में स्थिर रहने का गुण है।''[26] मसीही व्यक्ति जिस पर कभी गम्भीर परेशानी नहीं आई वह बिना परखा मसीही है। जो सफलतापूर्वक परमेश्वर की सहायता से अपनी परीक्षाओं में निकल आता है, वह ''खरा'' और ''परखा हुआ'' है। नये-नये भर्ती हुए और युद्ध में परखे गए सिपाही होने में अन्तर है। यह अन्तर मसीह में ''बालक'' और परमेश्वर की ''परिपक्व'' संतान का है (इब्रानियों 5:13, 14)। ''खरे स्वभाव'' वाला मसीही वह है, जिस पर भरोसा किया जा सकता है और उस पर निर्भर रहा जा सकता है। मसीही लोग उस व्यक्ति पर निर्भर होने से हिचकिचाते नहीं हैं, क्योंकि उसने कालांतर में अपने आपको विश्वासयोग्य साबित किया है।

''आशा'' (आयतें 4ख, 5क)

पौलुस ने अपनी शृंखला यह कहते हुए पूरी की कि ''खरा निकलने से आशा उत्पन्न होती है'' (आयत 4ख)। प्रभु में विश्वास के साथ क्लेश का सामना करने पर हम उसे सहने में सक्षम होते हैं। धीरज से हम ''परीक्षा का सामना करते'' और आत्मिकरूप में बढ़ते हैं। यह सब हमें और विश्वास दिलाता है कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं पक्की हैं (देखें 2 कुरिन्थियों 1:20)। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह हमें कभी छोड़ेगा या त्यागेगा नहीं (इब्रानियों 13:5) और उसने त्यागा भी नहीं है। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह हमें सहने की हमारी शक्ति से अधिक नहीं देगा (1 कुरिन्थियों 10:13), और वह देता भी नहीं है। उसने प्रतिज्ञा की कि वह हमारी भलाई के लिए सब चीज़ों को इकट्ठा करते हुए हमारे जीवनों में काम करेगा (रोमियों 8:28), और वह अपनी बात का पक्का है। इस कारण परमेश्वर में और उसकी प्रतिज्ञाओं में हमारी *आशा* दिन प्रतिदिन बढ़ती है।

आशा से आरम्भ की गई पौलुस की शृंखला (आयत 2), आशा के साथ ही समाप्त होती है (आयत 4)। हम इसे ''एक दूसरे से जुड़े लाभों का चक्र'' कह सकते हैं।[27]

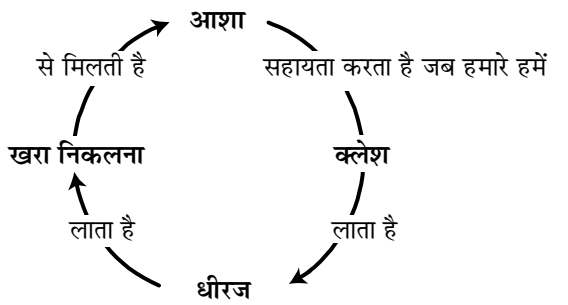

पौलुस ने जोड़ा कि ''आशा से लज्जा नहीं होती'' (आयत 5क)। ''लज्जा'' यूनानी शब्द *kataischuno* से लिया गया शब्द है, जिसका अर्थ है ''शर्मिंदा करना'' (*aischuno* ['शर्म'']

kata से मजबूत करके) (देखें KJV)। ''लज्जा'' का मूल वही शब्द है, जो 1:16 में ''लजाता'' का है। पौलुस के विचार को कई प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है। हमारी आशा हमें कभी निराश नहीं करेगी यानी यह हमारा सिर नीचा नहीं होने देगी। जब हम दूसरों को बताते हैं कि हम यह आशा रखते हैं और कुछ पाने की उम्मीद करते हैं पर हमें नहीं मिलता तो यह परेशान करने वाला है, परन्तु रोमियों 5 अध्याय वाली आशा ऐसी नहीं है। जो कुछ परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है वह पूरा *होगा*। प्रभु में हमारी आशा हमें झुकने नहीं देगी क्योंकि प्रभु हमें झुकने नहीं देगा।

मुझे नहीं मालूम कि आपकी स्थिति क्या है। शायद आप आशावादी हैं या हो सकता है कि आप अपने आप को यथार्थवादी कहते हैं। परन्तु एक मसीही होने के नाते आप उसके बारे में जो सबसे महत्वपूर्ण है ''आशावादी'' हो सकते हैं यानी आप भविष्य के लिए *आशा* रख सकते हैं और *जान* सकते हैं कि आप निराश नहीं होंगे।

क्या आपको यह जानने की आवश्यकता है ? हां। जो लोग सिखाते हैं क्या उन्हें यह जानने की आवश्यकता है ? हां। क्या आपके बच्चों को जानने की आवश्यकता है ? बिल्कुल ! उन्हें यह बताएं कि वे जीवन में परेशानी की उम्मीद कर सकते हैं परन्तु यदि वे परीक्षाओं का सामना विश्वास से करते हैं तो उनकी समस्याएं उन्हें बदतर नहीं, बल्कि बेहतर बना देंगी ! क्या उन्हें अभी समझ आ जाएगी जब वे बच्चे ही हैं ? शायद नहीं, परन्तु उन्हें सिखाएं ... और अपने जीवन में इसे दिखाएं। एक दिन इससे फर्क पड़ सकता है कि आपके बच्चे प्रभु के साथ बने रहते हैं या उससे फिर जाते हैं।

जो भी हो, इस अद्‌भुत सच्चाई से जुड़े रहें: परमेश्वर आप से प्रेम करता है ! (5:5ख-8)

हर कोई चाहता है कि उससे प्रेम किया जाए। हर किसी को लगता है कि कोई उसे महत्व दे। एक कहानी ''मूक परीक्षा'' की है, जो बचपन में ही अपंग और कुरूप हो गई एक स्त्री द्वारा लिखी गई। जब वह बच्ची थी तो उसे लगता था कि शायद उससे कोई प्रेम न करे। स्कूल के वर्षों के दौरान एक बार उसकी टीचर ने उसे मूक भाषा की आसान सी परीक्षा दी। उसे एक छात्रा को द्वार पर खड़ा करके स्वयं उसकी डेस्क पर बैठकर मूक शब्दों को सुनना था। फिर छात्रा ने उसके डेस्क पर आकर उसे बताना था कि उसने क्या बोला। उस लड़की की बारी आने पर वह दरवाज़े के पास खड़ी हो गई और मूक भाषा सुनने की प्रतीक्षा करने लगी। उसकी टीचर ने जो कहा वह इस प्रकार है: ''काश, तू मेरी नन्हीं सी बेटी होती।'' बाद में उस स्त्री ने लिखा कि उन सात शब्दों ने उसका जीवन बदल दिया था।[28]

मुझे उम्मीद है कि आपके पास बहुत से लोग हैं, जो आपसे प्रेम करते हैं (यूहन्ना 13:34), परन्तु हों या न, आप जान सकते हैं कि कोई है, जो आपसे प्रेम करता है; यानी प्रभु। पौलुस के सामने जो भी दिक्कतें आईं, वह चलता रह सका क्योंकि उसे एक बात का यकीन था कि परमेश्वर उससे प्रेम करता है ! उसकी शान्ति, उसके आनन्द का कारण और उसकी आशा के आधार का यही कारण था।

हम धर्मी ठहराए जाने की आशिषों की बात कर रहे हैं। कोई चकित हो सकता है, ''परन्तु क्या प्रमाण है कि ये सब आशिषें मुझे मिल सकती हैं ?'' यह रहा प्रमाण: यहां वह वास्तविकता

है, जिससे जीवन में कुछ भी हो जाने के बावजूद आप जुड़े रह सकते हैं और वह यह है कि परमेश्वर आपसे *प्रेम करता* है और उसने अपना प्रेम बार-बार दिखाया है। 5ख से 8 आयतों में पौलुस ने परमेश्वर के प्रेम की दो अभिव्यक्तियां बताईं।

आत्मा का दान (आयत 5ख)

मसीह में हमारी आशा के बारे में बात जारी रखते हुए पौलुस ने कहा, ''और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम[29] हमारे मन में डाला गया है'' (आयत 5क, ख)। आश्चर्य की बात है कि परमेश्वर के प्रेम का उल्लेख रोमियों की पुस्तक में यहां पहली बार आया है। पौलुस के पत्र में उस सब पर बात हुई है, जो अनुग्रह से परमेश्वर ने हमारे लिए किया है, परन्तु अब यह प्रकट करता है कि परमेश्वर ने यह *क्यों* किया, क्योंकि वह हमसे *प्रेम करता* है।

''प्रेम'' के लिए शब्द *agape* प्रेम है जो शर्त रहित अर्थात जो प्रेम किए जाने वाले व्यक्ति का भला चाहता है। यह प्रेम ''हमारे मन में डाला गया[30] है।'' ''डाला गया'' यूनानी शब्द *ekcheo* का अनुवाद है, जो ''उण्डेलना'' (*cheo*) के साथ ''बाहर'' (*ek*) को मिलाता है।[31] ''डाला'' इस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर अपने प्रेम में कंजूसी नहीं करता। पौलुस ने ''झुलसे हुए देहात पर बादल के फटने का स्पष्ट रूपक'' इस्तेमाल किया।[32] मुझे ह्यूगो मेकोर्ड की कुछ हंसाने वाली यह टिप्पणी पसन्द है: ''जब परमेश्वर ने अपना प्रेम उण्डेला, तो उसने *बड़े* टब का इस्तेमाल किया!''[33]

पौलुस ने कहा कि ''पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का [यह] प्रेम हमारे मन में डाला गया है'' (आयत 5ख, ग)। पवित्र आत्मा का उल्लेख पत्र में हुआ (1:4; 2:29), परन्तु मसीही लोगों के जीवनों में आत्मा के काम का यह पहला हवाला है।[34] किसी के जीवन में आत्मा तब प्रवेश करता है जब उसे धर्मी ठहराया जाता है, यानी जब वह मसीह में परिवर्तित होता है। ''पवित्र आत्मा सब विश्वासियों को उनके नये जन्म के समय,''[35] ''मसीह में बपतिस्मा लेने के समय दिया जाता है (प्रेरितों 2:38 से)।''[36]

पवित्र आत्मा के काम की चर्चा रोमियों 8 में की जाएगी। यहां उसकी गतिविधि का एक पहलू दिया गया है कि परमेश्वर का प्रेम आत्मा के द्वारा हमारे मनों में डाला गया है। हम इस बारे में हठधर्मी नहीं हो सकते कि आत्मा यह *कैसे* करता है। अपनी आश्चर्यकर्म रहित गतिविधि के सम्बन्ध पवित्र आत्मा का मुख्य ढंग अपनी प्रेरणा से दिए वचन हैं (इफिसियों 6:17; 2 पतरस 1:21)। कई आयतें इस बात पर ज़ोर देती हैं कि वह मसीही व्यक्ति के अन्दर वास करता है (उदाहरण के लिए देखें रोमियों 8:9-11)। इसके अलावा पौलुस ने आत्मा के काम को बारीकी से रोमियों 8 में परमेश्वर के उपाय से जोड़ा है (आयतें 26-28), इसलिए हम यह भी कह सकते हैं कि आत्मा ''उपाय करने के द्वारा'' काम करता है। वह घटनाओं को आज्ञा देता है, जिससे हमारे जीवन आशीषित हों।

तो फिर पौलुस के यह कहने का क्या अर्थ था कि परमेश्वर का प्रेम आत्मा के द्वारा डाला गया है? उसके कहने का अभिप्राय यह हो सकता है कि परमेश्वर का पवित्र आत्मा देना (प्रेरितों 2:38; 5:32) उसके भरपूर प्रेम का प्रमाण है। पौलुस के अनुसार आत्मा का दान हमारे पुत्र होने

का प्रमाण है (गलातियों 4:6)। आत्मा ''हमारी मीरास का बयाना'' (इफिसियों 1:14) यानी हमारी मीरास की ''पेशगी'' और उस मीरास की ''गारण्टी'' है। इस कारण रोमियों 5:5ख को यूं भी पढ़ा जा सकता है, ''परमेश्वर का प्रेम हमारे मनों में पवित्र आत्मा [के महत्व की हमारी जानकारी] के द्वारा जो हमें दिया गया था, डाला गया है।'' यह व्याख्या ''आशा'' पर पौलुस के ज़ोर देने से मेल खाती है।

एक और सम्भावना है कि आयत 5 को अगली आयतों के प्रकाश में समझा जाए। परमेश्वर के प्रेम का सर्वोत्तम उदाहरण अपने पुत्र का उसका बलिदान है (5:6-8)। इसका पता हमें आत्मा की प्रेरणा से दिए गए वचन से चलता है। इस कारण पौलुस यह कह सकता था कि ''परमेश्वर का प्रेम हमारे मनों में पवित्र आत्मा [वचन में दिखाए गए उसके प्रेम को जानने] के द्वारा जो हमें दिया गया था, डाला गया था।''

कई टीकाकार इन व्याख्याओं से डरते हैं। वे यह ज़ोर देते हैं कि ''मनों में'' वाक्यांश और व्यक्तिगत और आत्मा के सीधे कार्य को आवश्यक बना देता है। वे ''जोशीली भावनाओं से'' आत्मा के अपने मनों को भरने की बात लिखते हैं, कुछ तो बिल्कुल ... ढंग से। मैं यह इनकार नहीं करता कि अपने लिए परमेश्वर के प्रेम को जानने से हमारे मन गदगद हो जाते हैं, परन्तु ''जोशीली भावनाएं'' *नहीं* होने पर क्या होगा? क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर अब हमसे प्रेम नहीं करता है? बेशक ऐसा नहीं है। इसका अर्थ केवल यह है कि भावनाएं ऊपर-नीचे होती रहती हैं, यानी भावनाएं हमारी आत्मिक स्थिति का मापक नहीं हो सकतीं।

मसीह की मृत्यु (आयत 6-8)

परमेश्वर के प्रेम के लिए प्रेरितों का पहला प्रमाण कुछ अस्पष्ट हो सकता है परन्तु दूसरा नहीं। इसका आधार इतिहास के एक तथ्य अर्थात रोमी क्रूस पर यीशु की मृत्यु में है। पौलुस ने कहा:

> क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा (आयत 6-8)।

यह आयत ''मसीह हमारे लिए मरा'' शब्दों के साथ समाप्त होती है। यदि यह केवल यह कहती कि ''मसीह मरा,'' तो यह बुरा होता; परन्तु यह कहती है कि ''मसीह *हमारे लिए* मरा'' और उस में हमारा उद्धार है! मसीह की मृत्यु परमेश्वर के प्रेम का ''प्रदर्शन'' है। NCV बाइबल में कहा गया है, ''परन्तु परमेश्वर हमारे लिए अपना महान प्रेम इस प्रकार दिखाता है कि मसीह हमारे लिए मरा ...'' (आयत 8)।

कई बार पौलुस के लिए यह समझना कठिन होता होगा कि इतनी भयनाक बातें क्यों होती हैं। कई बार वह हैरान होता होगा कि सब कुछ भलाई के लिए कैसे होता है। परन्तु इस सबके बीच में वह अपने लिए परमेश्वर के प्रेम में आश्वस्त था। उसने यह प्रेम अपने पुत्र को क्रूस पर मरने

के लिए भेज कर साबित कर दिया था! गलातियों के नाम पत्र लिखवाते हुए पौलुस की आवाज़ में आश्चर्य सुनाई दे सकता है: ''परमेश्वर के पुत्र ... ने *मुझ* से प्रेम किया, और *मेरे* लिए अपने आप को दे दिया'' (गलातियों 2:20)।

यदि मुझे और आपको जीवन की परीक्षाओं में दृढ़ बने रहना है तो हमें इस सच्चाई में बने रहना आवश्यक है कि ''मसीह *मुझ* से प्रेम करता है और उसने *मेरे* लिए अपने आप को दे दिया।'' हमें यह बात सबको बतानी चाहिए। सबसे बढ़कर हमें यह अद्‌भुत सच्चाई अपने बच्चों को बतानी चाहिए। उन पर जीवन में चाहे कुछ भी क्यों न गिर पड़े वे इस अद्‌भुत सच्चाई से जुड़े रह सकते हैं कि परमेश्वर उनसे *प्रेम करता* है! उसने उनके लिए अपने पुत्र को मरने भेजकर इसका पक्का सबूत दे दिया!

सारांश

आप अपने बच्चों के लिए कैसी विरासत छोड़कर जाएंगे? कइयों का ध्यान अपने बच्चों के लिए धन या सम्पत्ति छोड़कर जाने पर है। कई इस बात से अनजान हैं कि सबसे बड़ी विरासत जो वे छोड़ सकते हैं, वे ''चीज़ें'' नहीं हैं। जब मुझे किसी जनाज़े पर वचन सुनाने के लिए कहा जाता है तो मैं आराधना से पहले उस परिवार से मिलने की कोशिश करता हूं। मैं मरने वाले व्यक्ति के बच्चों से पूछता हूं ''आप अपनी माता [या अपने पिता] को एक शब्द में कैसे बताएंगे?'' मैं आमतौर पर ''ईमानदार'' ''धैर्यवान,'' और ''प्रेमी'' शब्द सुनता हूं। मुझे किसी बेटे या बेटी से ''धनवान'' या ''सफल'' शब्द सुनाई नहीं दिए। इस पाठ में मैंने सुझाव दिया है कि आप अपने बच्चों के लिए जो सबसे बड़ी विरासत छोड़ सकते हैं वह इन तीन सच्चाइयों का ज्ञान है:

1. सच्ची शान्ति झगड़े की अनुपस्थिति में नहीं, बल्कि प्रभु की उपस्थिति में होती है।
2. आप फैसला करें कि समस्या आपको बेहतर बनाती है या बदतर।
3. जो भी हो, इस अद्‌भुत सच्चाई से जुड़े रहें कि परमेश्वर आप से प्रेम करता है!

बेशक, आपको अपने बच्चों को यह सच्चाइयां *सिखानी* ही नहीं चाहिए, बल्कि अपने जीवन के द्वारा *दिखानी* भी चाहिए कि आप स्वयं उन्हें मानते हैं। आपके लिए मसीही बनना और फिर मसीह के रूप में *जीना,* अर्थात प्रभु में विश्वास रखने वाले मसीही बनना आवश्यक है। यदि आप मसीही नहीं हैं या आप अपने बच्चों के सामने सही नमूना नहीं दे पाए तो मेरी प्रार्थना है कि आप इन आत्मिक आवश्यकताओं पर आज ही ध्यान दें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस प्रवचन का इस्तेमाल करने पर अपने सुनने वालों को बताएं कि मसीही कैसे बनना है (यूहन्ना 3:16; मरकुस 16:16)। इसके अलावा भटके हुए मसीही लोगों को भी समझाएं कि प्रभु में कैसे वापस आ सकते हैं (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)।

इस पाठ के मुख्य शीर्षक ''लोकोक्तियां'' बनाने के लिए बनाए गए हैं ताकि सुनने वाले उन्हें याद रख सकें। आपको उन्हें प्रत्येक सच्चाई की बात करते हुए दिखाने के लिए बोर्ड के टुकड़ों पर

लगाना चाहिए।

हाल ही में मैंने यह पाठ बूढ़ी मसीही स्त्रियों के एक समूह में बताया, जिनमें से किसी का भी बच्चा घर नहीं था। उनके लिए मैंने तीन सच्चाइयों की बात की जिनका *उन्हें* पता होना चाहिए।

इस पाठ को अलग-अलग ढंगों से समझाया जा सकता है। कई लेखक 5:1-11 पर अपने पाठकों का शीर्षक ''धर्मी ठहराए जाने की आशीषें'' जैसे शीर्षकों में देते हैं। आशिषें अलग-अलग होती हैं, जिनमें कइयों को इस पद्य में दर्जनों आशिषें मिल जाती हैं। ''आनन्दित'' (''आनन्द,'' ''घमण्ड'' शब्द तीनों आयतों में मिलता है (आयतें 2, 3, 11), उनका इस्तेमाल मुख्य प्वायंटों के लिए किया जा सकता है। ऐसी प्रस्तुति का एक सम्भावित शीर्षक ''आप किस बात की शेखी मारते हैं'' है। ''आशा'' मुख्य विषय है (आयतें 2, 4, 5), सो आपकी टिप्पणियां उसी विषय पर केन्द्रित हो सकती हैं। आप ''मेल'' की बात करने के लिए वचन पाठ का भी इस्तेमाल कर सकते हैं (आयत 1): ''आप मेल कर सकते हैं क्योंकि ...'' वचन की आशिषें गिनाएं।

''विश्वास, आशा और प्रेम'' पर सिखाने के लिए आप 5:1-8 का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। पौलुस आम तौर पर इन तीनों बड़े विषयों को मिला देता था (देखें 1 कुरिन्थियों 13:13; गलातियों 5:5, 6; कुलुस्सियों 1:4, 5; 1 थिस्सलुनीकियों 1:3)। हमारे वचन पाठ में वह ''विश्वास'' (आयत 1) से ''आशा'' (आयतें 2, 4, 5) से ''प्रेम'' (आयतें 5, 8) में चला गया।

चाहें तो इस और अगले पाठ को 5:1-11 को पूरा बताने के लिए एक ही प्रस्तुति में मिलाया जा सकता है। एक ढंग इन विभाजनों ''नये लाभ'' (आयतें 1, 2), ''एक नया व्यवहार'' (आयतें 3-5क) और ''नया आश्वासन'' (आयतें 5ख-11) के साथ ''मसीह में एक नया जीवन'' हो सकता है। आप ''रोमांचकारी परिणाम'' (आयतें 1, 2), ''प्रोत्साहित करने वाली शांति'' (आयतें 3-5क) और ''स्थिर रहने वाला विश्वास'' (आयतें 5ख-11) शीर्षकों का इस्तेमाल करते हुए ''मसीही होने का आपको यह मिलता है'' पर प्रवचन भी दे सकते हैं।

''अकेले खड़े होने'' के रूप में प्रवचन देने के लिए इस प्रस्तुति का इस्तेमाल करते हुए मैं बच्चों को सिखाने के लिए *चार* सच्चाइयां बताता हूं। मैं आयत 1 में ''विश्वास से धर्मी ठहराए जाना'' के बारे में पौलुस के आरम्भिक शब्दों से आरम्भ करके पहले यह बात जोड़ता हूं कि ''परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध से बढ़कर जीवन में और कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है।''

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *द लैटर टू रोमन्स,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर्स प्रेस, 1975), 72. [2]आर. सी. बेल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 43. [3]इस ढंग का सुझाव ईस्टसाइड चर्च ऑफ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी ओक्लाहोमा, में 24-25 अप्रैल 2004 को एवरट्ट हुफर्ड द्वारा ''आत्मिक विरासत'' पर दी गई शृंखला में दिया गया था। [4]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *द मैसेज आफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 139. संसार द्वारा ''शांति'' की खोज के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले कुछ ढंगों की समीक्षा के लिए, देखें जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फ़र्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 189-91. [5]कई प्राचीन हस्तलिपियों में ''मेल रखें'' के बजाय ''आओ मेल रखें'' है। एक यूनानी शब्द में दोनों के पढ़ने में अन्तर केवल एक अक्षर अर्थात ''लम्बा'' ''o'' बनान छोटा ''o'' का है। अधिकतर अनुवादकों का विचार ताड़ना के बजाय

एक प्रथम के लिए संदर्भ की पुकार करता है। [6]लैरी डीयसन, *''दि राइटियसनेस ऑफ़ गॉड'': एन इन-डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (क्लिफटन लाइफ कम्युनिकेशंस, 1989), 134. [7]कुछ यूनानी हस्तलिपियों में ''विश्वास के कारण'' नहीं है, परन्तु वाक्यांश से समझ आ जाता है, यदि न लिखा होता (देखें आयत 1)। [8]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 7. एक और सम्भावित अनुवाद ''पहुंच'' है (देखें KJV)। यदि उस अनुवाद का इस्तेमाल किया जाता है तो यीशु को पहुंच के मार्ग (''द्वार''; यूहन्ना 10:9) के रूप में दिखाया जाता है। [9]यदि आपका किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से औपचारिक परिचय करवाया गया हो, तो आप उसे उदाहरण के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। [10]लियोन मौरिस, *द एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 219.

[11]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ. अर्ंट एंड विल्बर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 886. [12]जॉन न्यूटन, ''अमेजिंग ग्रेस,'' *सांग्स ऑफ़ फेथ एंड प्रेज़,* संपा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994). [13]डेविड माउडे, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी ओक्लाहोमा, 7 दिसम्बर 2003 को बताई गई डिवोशनल बातचीत। [14]विलियम बार्कले, *न्यू टैस्टामैंट वर्ड्स* (फिलाडेल्फिया: वेस्ट मिंस्टर प्रैस, 1974), 76. [15]दो अन्य हैं याकूब 1:2, 3 और 1 पतरस 1:6, 7. [16]पॉल ली टैन, *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ 7,700 इलस्ट्रेशंस* (रॉकविलै, मेरीलैंड: एशोरेंश पब्लिशर्स, 1979), 1508. [17]वाईन, 17, 643. [18]बार्कले, *लैटर टू द रोमन्स,* 73. [19]डेल हर्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी ओक्लाहोमा, 11 जनवरी 2004 को 1 पतरस पर सिखाई गई क्लास से लिया गया। [20]बेल, 44.

[21]KJV ''धीरज'' की जगह ''सहनशीलता'' है। KJV दोनों यूनानी शब्दों का अनुवाद अंग्रेज़ी शब्द ''patience'' के साथ करता है। कठिन लोगों के साथ सहनशील होने के लिए (*makrothumia*) करना पड़ता है जबकि दूसरे (यहां प्रयुक्त शब्द, *hupomone*) का सम्बन्ध कठिन परिस्थितयों में सहने (सहनशीलता से) है। [22]*Hupo* का अर्थ है ''अधीन'' और *meno* का अर्थ ''रहना'' (वाईन, 462) या ''बने रहना'' है। मैं ''रहना'' के बजाय ''बने रहना'' का इस्तेमाल करता हूं। [23]ईस्टसाइड चर्च ऑफ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी ओक्लाहोमा, 18 जनवरी 2004 को ''सहनशीलता'' पर दिया गया डेल हार्टमैन का प्रवचन। [24]बार्कले, *लैटर टू द रोमन्स,* 73. [25]हार्टमैन, क्लास, 15 फरवरी 2004. [26]मौरिस, 220, एन.11. [27]जिम टाउनसेंड, *रोमन्स: लैट जस्टिस रोल* (एलजिन, ईलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 37 से लिया गया। [28]स्टॉट, 142. [29]इसका इस्तेमाल परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम के लिए किया जा सकता है, परन्तु यह संकेत देता है कि पौलुस हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम की बात कर रहा था (आयत 8)। [30]KJV में ''shed abroad'' है।

[31]प्रेरितों 2:33 में इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया था, जहां इसका अर्थ प्रेरितों को दी गई आश्चर्यकर्म की योग्यताएं है। यहां इसका अर्थ हर मसीही पर दिया गया परमेश्वर का प्रेम है। [32]जेम्स डी. जी. डन, *रोमन्स 1-8,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 38 (डल्लास: वर्ड बुक्स, 1988), 253. [33]ह्यूगो मेकोर्ड, ओक्लाहोमा क्रिश्चियन कॉलेज (अब विश्वविद्यालय) में छात्रों को दी गई रोमियों 5 की चर्चा, तिथि नहीं, कैसेट। [34]आपको यह उल्लेख करना चाहिए कि जैसा कि हमारा वचन पाठ धर्मी ठहराई जाने वाली आशिषों की बात करता है, यह परमेश्वरत्व अर्थात पिता और पवित्र आत्मा के कार्य का उल्लेख करता है। [35]जे. डब्ल्यू. मैकगर्वे एंड फिलिप वाई. पेंडलटन, थसलोनियंस, कोरन्थियंस, गलेशियंस एंड रोमन्स (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ट पब्लिशिंग, तिथि नहीं), 331. [36]कॉफ़मैन, 197.